Question :- Discuss the Contribution of Gestalt psychology in the field of Perception or learning and thinking.

OR

Discuss the trends and Contribution of Gestalt School

OR

Discuss the Contribution and achivements of Wertheimer, Kohler and ~~Koffko~~ Koffko to the development of Gestalt School of psychology :

OR

Ans. :- Gestalt वाद अथवा Gestalt मनोविज्ञान की स्थापना एक सम्प्रदाय के रूप में 1912 में जर्मनी में हुई। इसका विकास Wundt के संरचनावाद के विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के विरोध में हुआ। Wundt तथा titchener ने चेतन अनुभूति की व्याख्या विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से किया। Wundt प्रत्यक्षीकरण को संवेदना तथा अनुभूति का योगफल माना लेकिन Wertheimer ने इसका विरोध किया। उन्होंने motion picture पर अनेक प्रयोगात्मक अध्ययन करके प्रमाणित किया कि प्रत्यक्षीकरण विश्लेषणात्मक प्रक्रिया नहीं है। बल्कि समग्र प्रक्रिया है। इस प्रयोग में Kohler तथा Koffko ने प्रयोज्य का काम किया। इसलिये पुनः तीनों मनोवैज्ञानिक को Gestalt वादी मनोवैज्ञानिक माना जाता है। उनके योगदानों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है।

① **Perception प्रत्यक्षीकरण**

Gestalt वाद मुख्य रूप से प्रत्यक्षीकरण के लिये प्रसिद्ध है। सच तो यह है कि प्रत्यक्षीकरण की व्याख्या के लिये ही Gestalt वाद विकसित हुआ। इस क्षेत्र में Gestalt वाद एक योगदान संगठन है। Wundt तथा Titchner प्रत्यक्षीकरण को विश्लेषणात्मक प्रक्रिया माना था। लेकिन Gestalt वादी मनोवैज्ञानिकों ने इसे एक संगठनात्मक प्रक्रिया माना। उन्होंने कहा कि किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण भिन्न भिन्न अंगों में नहीं होता बल्कि संगठित रूप में होता है। हमें किसी व्यक्ति के भिन्न भिन्न अंगों का प्रत्यक्षीकरण अलग अलग नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण मनुष्य का प्रत्यक्षीकरण एक ही साथ होता है। Gestalt वाद का यह योगदान आज भी महत्वपूर्ण है।

Gestalt वाद का दूसरा योगदान यह है कि सम्पूर्ण का प्रत्यक्षीकरण उसके भिन्न भिन्न अंगों या अवयवों से थोड़ा भिन्न होता है। Wertheimer ने कहा है कि सम्पूर्ण में कुछ ऐसा गुण होता है जो उसकी किसी भी एक अंग में नहीं पाया जाता है। इसे प्रतिगामी गुण कहा जाता है। Wertheimer ने अपने प्रयोग द्वारा कि प्रकाश की भिन्न भिन्न रेखायें स्थिर होने पर भी प्रयोज्यों को उसमें गति का प्रत्यक्षीकरण हुआ। Gestalt वाद का यह योगदान आज भी मान्य है।

Scanned with CamScanner

(तीसरा [illegible] है।)

Gestalt वादी मनोवैज्ञानिक ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र में दो तरह के शक्तियाँ काम करती हैं। उन्हें आकर्षक शक्ति तथा विकर्षक शक्ति कहते हैं। आकर्षक शक्ति के कारण ~~मनुष्य आपस में संगठित होते हैं~~ वस्तुएँ आपस में संगठित होते हैं। और विकर्षक शक्ति के कारण वस्तुएँ आपस में संगठित नहीं हो पाते हैं। किसी वस्तु के प्रत्यक्षीकरण के लिए ये दोनों शक्तियाँ आवश्यक हैं। जेस्टाल्टवाद का यह विचार आज भी सत्य है।

जेस्टाल्टवाद का चौथा योगदान आकार तथा भूमि है। Gestalt वादी मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र को दो भागों में विभाजित किया है जिन्हें आकार तथा भूमि कहते हैं। आकार अंशपूर्ण होता है तथा संगठित होता है और उसका प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति पर होता है लेकिन पृष्ठभूमि अस्पष्ट होती है, अर्थहीन होती है असंगठित होती है और वह केवल आकार के प्रत्यक्षीकरण में सहायक होती है। किसी वस्तु के प्रत्यक्षीकरण के लिए आकार तथा पृष्ठभूमि के बीच गत्यात्मक सम्बन्ध होता है। जिनका विचार आज भी मान्य है। Gestalt वाद का एक योगदान संगठन के नियम हैं Gestalt वादी मनोवैज्ञानिकों ने संगठन के तीन प्रकार के नियमों का उल्लेख किया जिन्हें केन्द्रीय नियम, परिधिय नियम, प्रबलन नियम कहते हैं। केन्द्रीय नियम के अन्तर्गत मानसिक दृष्टि के नियम, परिधीय के नियम आदि का उल्लेख किया गया है। परिधीय नियम के,

अन्तर्गत समानता, निकटता, क्रमबद्धता आदि के नियम का उल्लेख किया गया है। चलन नियम के अन्तर्गत सार्थकता आदि नियमों की चर्चा की जाती है। Gestalt के नियमों की चर्चा की जाती है। Gestalt वादियों का यह विचार आज भी परिमार्जित रूप से मान्य है।

इस तरह स्पष्ट हुआ कि प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र में Gestalt वाद के अनेक योगदान हैं। लेकिन Gestalt वादियों ने संगठन को जन्मजात माना और प्रत्यक्षीकरण में पूर्व अनुभूति, शिक्षा आदि के महत्व को स्वीकार्य नहीं किया। इस कारण इस सिद्धान्त की उपयोगिता घट गई और व्यवहारवाद उस पर हावी हो गया। इसके बावजूद Gestalt वाद के मूल्य तथ्य या अभिधारणाएँ आज भी मान्य हैं।

(2) Learning

Gestalt वाद का योगदान प्रत्यक्षीकरण के साथ-साथ शिक्षण के क्षेत्र में भी है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से Kohler और Koffka ने योगदान दिया। यहाँ Gestalt वादियों ने विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का विरोध किया। और समग्र दृष्टिकोण पर बल दिया। Thorndike आदि मनोवैज्ञानिकों ने शिक्षण की विश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की जिसका विरोध Gestalt वादियों ने किया। Thorndike ने कहा कि छात्र शैक्षिक परिस्थिति में किसी एक अंश को ध्यान में रखकर प्रतिक्रिया करता है। यदि इस अंश से सम्बन्धित प्रतिक्रिया सुखद हो जाती है तो छात्र उसको सीख लेता है और यदि उस अंश से सम्बन्धित प्रतिक्रिया दुःखद होती है तो क्रमशः वह दुर्बल होता जाता है और छात्र उसे भुला देता है।

इसप्रकार भिन्न अंशों के माध्यम से प्राणी अपने समस्या का समाधान सीखता है। Kohler ने इस विचार का विरोध किया और कहा कि प्राणी सम्पूर्ण भौतिक परिस्थिति को ध्यान में रखकर अपनी समस्या का समाधान का प्रयास करता है। वह partwise नहीं सीखता बल्कि as a whole सीखता है।

शिक्षण के क्षेत्र में Gestalt वादियों ने पहली बार प्राणी को महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षण साधारण उत्तेजना प्रतिक्रिया के सम्बन्ध नहीं है बल्कि उत्तेजना, प्राणी प्रतिक्रिया के सम्बन्ध है। Thorndike ने कहा था कि उत्तेजना तथा प्रतिक्रिया का सीधा सम्बन्ध होता है। और इस सम्बन्ध का आधार अभ्यास होता है। इसमें शारीरिक महत्व को गौण कर दिया गया था। लेकिन Kohler ने प्राणी के सूझ को शिक्षण का आधार माना। वनमानुष पर किए गए प्रयोगों के आधार पर साबित किया गया कि शिक्षण का प्रभाव अभ्यास नहीं है बल्कि सूझ है। इस दृष्टिकोण से भी Gestalt वादियों ने शिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया जिससे एक नई विचारधारा विकसित हो सकी। शिक्षण के क्षेत्र में Gestalt वादियों ने प्राणी के व्यवहार को संगठित माना जिसे बाद में Molar behavior की संज्ञा दी गई। इसी परिवेश में Tolman (1938) ने शिक्षण के स्थान सिद्धान्त को विकसित किया। उल्लेखनीय है कि समकालीन व्यवहार वादियों ने शिक्षण में प्राणी के व्यवहार को Molecular माना था। Watson सम्बन्ध था कि सीखते समय किसी समस्या का समाधान

प्राणी का व्यवहार molecular होता है।
Gestalt वादियों के इसी दृष्टिकोण से प्रभावित
होकर ही संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का विकास
हो सका जिसमें शिक्षण के क्षेत्र में Gestalt
वाद का योगदान प्रमाणित होता है।

शिक्षण के क्षेत्र में भी Gestalt वादियों को केवल आंशिक सफलता मिली। Gestalt वादियों ने शिक्षण को केवल सूझ पर आधारित माना और अभ्यास के महत्व को गौण कर दिया। लेकिन Guthrie (1956) ने कहा है कि शिक्षण में जो सफलता मिलती है उसका आधार सूझ तथा अभ्यास दोनों होता है। इसलिए उन्होंने कहा कि "Insight is gradual and graduated"

③ चिन्तन (Thinking) →

Gestalt वाद का योगदान प्रत्यक्षीकरण तथा शिक्षण के साथ-साथ चिन्तन के क्षेत्र में भी देखा जाता है। Gestalt वादी मनोवैज्ञानिक ने चिन्तन की व्याख्या समग्र दृष्टिकोण के आधार पर करने का प्रयास किया। Thorndike ने कहा था कि चिन्तन के लिए केवल प्रयत्न तथा भूल की आवश्यकता होती है। जब व्यक्ति के सामने कोई समस्या उत्पन्न होती है तो वह बिना किसी योजना के प्रयास करना शुरू कर देता है और उसे अकस्मात् सफलता मिल जाती है। इसी प्रकार कई प्रयासों के बाद वह अपने समस्या का समाधान सिख लेता है। उन्होंने बिल्ली तथा चूहे का प्रयोग किया और प्रमाणित किया कि चिन्तन का आधार प्रयत्न तथा भूल है। लेकिन Kohler तथा Koffka ने शिक्षण के तरह चिन्तन

Scanned with CamScanner

को भी सूझ पर आधारित माना। उन्होंने सुल्तान नाम के एक नीच बुद्धि के वनमानुष पर प्रयोग किया और देखा कि चिन्तन का मौलिक आधार सूझ है। लेकिन उस सम्बन्ध में भी Gestalt वादी मनोवैज्ञानिक को केवल आंशिक सफलता मिली। Duncker ने कहा कि शिक्षण के तरह चिंतन या समस्या समाधान में भी सूझ के साथ-साथ अभ्यास आवश्यक है। Wertheimer ने रचनात्मक चिंतन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण योगदान दिया। Woodworth तथा Sheehan (1975) ने कहा है कि productive thinking के लिए सूझ बहुत आवश्यक है।

इसप्रकार स्पष्ट हो जाता है कि Gestalt वादियों ने तीन क्षेत्रों अर्थात् - प्रत्यक्षीकरण, शिक्षण, तथा चिन्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लेकिन इन तीनों क्षेत्रों में उन्हें केवल आंशिक सफलता मिली। इसलिए Woodworth तथा Sheehan ने कहा है कि प्रत्यक्षीकरण (perception) शिक्षण (Learning) तथा चिन्तन की व्याख्या करने में Gestalt वाद तथा व्यवहारवाद एक दूसरे के पूरक हैं।

Scanned with CamScanner